3

गिल्लू

(रेखाचित्र)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• किसी व्यक्ति या मनुष्येतर प्राणी का वर्णन	• गद्य • रेखाचित्र	• तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्द-प्रयोग • उपसर्ग, प्रत्यय • स्त्रीलिंग, पुल्लिंग	• संवेदनशीलता • समानुभूति • पर्यावरण-संरक्षण • स्मृति के आधार पर वर्णन

सारांश

इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने एक छोटे-से जीव गिलहरी के साथ जुड़ी अपनी यादों का उल्लेख किया है। कौवों की चोंच के प्रहार से घायल गिल्लू उन्हें अपने घर के आँगन में मिला। काफ़ी उपचार व देखभाल करके उन्होंने गिल्लू को पूरी तरह स्वस्थ कर लिया। धीरे-धीरे दोनों में आत्मीय संबंध बनते चले गए। गिल्लू हमेशा लेखिका के आसपास ही रहा करता था। वह अक्सर अपनी शरारतों द्वारा लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता रहता था। लेखिका को जब गिल्लू की हरकतों से यह अनुभव हुआ कि उसे अपने साथियों के साथ उछल-कूद करने जाने के लिए आज़ाद किया जाना चाहिए, तो उन्होंने खिड़की की जाली का कोना खोल दिया। गिल्लू दिन-भर बाहर घूमता और लेखिका के घर आते ही घर में वापस आ जाता। लेखिका जब अस्वस्थ होने के कारण अस्पताल में रही, गिल्लू घर पर बहुत उदास रहता। अपना मनपसंद भोजन काजू भी नहीं खाता। लेखिका जब घर वापस आई, तो उसके सिरहाने बैठकर उसके बालों को ऐसे सहलाता, मानो कोई सेविका देखभाल कर रही हो। गिलहरी की आयु दो वर्ष की होती है। गिल्लू अपने अंतिम समय में अपनी डलिया से उतरकर महादेवी के पास आ गया। महादेवी ने उसे अपनी हथेली में रखकर बचाने का प्रयास भी किया, पर वह नहीं बचा। उसकी मृत्यु के पश्चात् भी महादेवी को ऐसा लगता रहा कि फिर वह कहीं से अचानक आकर उन्हें चौंका देगा। गिल्लू की हर छोटी-बड़ी बात उन्हें याद आती रहती।

मुख्य बिंदु

- कभी-कभी एक चीज़ को देखकर किसी दूसरी चीज़ की याद आती है। इसे संबंध-भावना कहते हैं। लेखिका सोनजुही को देखती है, तो उसे गिल्लू की याद आती है। गिल्लू सोनजुही की छाया में बैठता था। लेखिका जब नज़दीक आती थी, तो अचानक कूदकर उसे चौंका देता था। गिल्लू को समाधि भी सोनजुही के नीचे दी गई, इसीलिए सोनजुही में आए फूल को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आती है।
- लेखिका ने पहली बार गिल्लू को तब देखा, जब वह अपने घोंसले से गिरकर घायल हो गया था और कौवे उस पर अपनी चोंचों से प्रहार कर रहे थे। लेखिका ने इस स्थिति का वर्णन करते हुए कौवों के स्वभाव का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। वह कौवों की अंतर्विरोधी स्थिति का भी उल्लेख करती है।

- लेखिका अपने करुणा-भाव और समानुभूति के कारण गिल्लू का उपचार करके उसे नया जीवन देती है। गिल्लू के प्रति करुणा और समानुभूति ही लेखिका और गिल्लू के आत्मीय संबंध का आधार है।
- लेखिका के वर्णन से पता लगता है कि जिस प्रकार मनुष्य में उम्र के अनुसार शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, वैसे ही अधिकांश मानवेतर प्राणियों में भी ये परिवर्तन होते हैं।
- युवावस्था में मुक्ति की इच्छा एक महत्त्वपूर्ण स्थिति है। यह समस्त प्राणी-जगत का मूल भाव है। इस भाव को पहचानकर उचित व्यवहार आवश्यक है।
- लेखिका द्वारा जीव-मनोविज्ञान की परख के उल्लेख से पता लगता है कि संवेदनशीलता, समानुभूति, स्नेह, आत्मीयता, लगाव, परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार आदि मनुष्येतर प्राणियों में भी पाए जाते हैं। यह उल्लेख हमें संदेश देता है कि हमें पशु-पक्षियों, प्रकृति आदि के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए।
- इस रेखाचित्र का अंत बहुत मार्मिक है।
- रेखाचित्र की भाषा-शैली आत्मकथात्मक, सहज, सरल और चित्रात्मक है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। इसमें 'पूर्वदीप्ति तकनीक' का उपयोग है। तत्सम, तद्भव, देशज तथा अन्य भाषाओं से आए (आगत) शब्दों का प्रयोग किया गया है।

आइए समझें

'गिल्लू' पाठ एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। रेखाचित्र में शब्दों के माध्यम से किसी के चरित्र की आंतरिक और बाह्य विशेषताओं का चित्रात्मक वर्णन किया जाता है। यही रेखाचित्र जब आत्मीयता को प्रदर्शित करने लगे, तो संस्मरण के करीब पहुँचने लगता है। इस पाठ को पढ़ते समय हमारे सामने गिल्लू का एक चित्र उभरने लगता है। महादेवी वर्मा ने अपने पास रहने वाले पशु-पक्षियों के बारे में कई रेखाचित्र लिखे हैं।

इस मार्मिक रेखाचित्र का उद्देश्य मानवेतर प्राणियों के प्रति लगाव एवं स्नेह की अभिव्यक्ति है।

यह जानना ज़रूरी है

- अपने परिवेश के प्रति सजगता एवं संवेदनशीलता ज़रूरी है।
- गिल्लू जैसे नन्हें व मासूम जीवों की गतिविधियों में भी सौंदर्य निहित है।
- घायल पशु-पक्षियों व जीव-जंतुओं की सहायता करनी चाहिए।
- पशु-पक्षियों में अपने संरक्षक के प्रति वफ़ादारी की भावना होती है।
- पशु-पक्षी हमारी प्रकृति का अभिन्न व महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

शब्द-भंडार

- तत्सम : संधि, जीव, दृष्टि, संभवतः, सुलभ, आहार, लघु प्राण, निश्चेष्ट, रक्त आदि।
- तद्भव : मिट्टी, बत्ती, मुँह, घर, पत्तियाँ, उँगली, हाथ आदि।
- देशज : झब्बेदार, चौंकाना, काँव-काँव, चिक्-चिक्, झुंड आदि।
- आगत : पेन्सिलीन, गमला, दीवार, हौले, तेज़ी, लिफ़ाफ़ा आदि।

पुल्लिंग-स्त्रीलिंग

- कुछ शब्दों का लिंग बताने के लिए 'नर' अथवा 'मादा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'गिलहरी' ऐसा ही शब्द है।
- प्रायः ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, किंतु कुछ पुल्लिंग भी होते हैं, जैसे–हाथी, माली इत्यादि।

उपसर्ग-प्रत्यय

- मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाये जाते हैं।

योग्यता बढ़ाएँ

- ऐसी संस्थाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जो घायल पशु-पक्षियों की देखभाल करती हैं।
- अपने या अपने आस-पास के किसी पालतू पशु-पक्षी की गतिविधियों का रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

रेखाचित्र का संप्रेष्य

'गिल्लू' रेखाचित्र में लेखिका ने गिल्लू नामक नर गिलहरी की जीवन-यात्रा का वर्णन किया है। गिल्लू के इस जीवन का संबंध लेखिका के जीवन से जुड़ जाता है। लेखिका ने गिल्लू के स्वभाव, रूप-रंग, आचरण और समयानुसार ज़रूरतों का जैसा वर्णन किया है, वह बहुत मार्मिक है। यह मार्मिकता हमें अपने आस-पास के जीवन के प्रति संवेदनशील बनाती है। यही इस पाठ का उद्देश्य भी है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- रेखाचित्र को ध्यान से पढ़िए और पाठ में दिए गए क्रियाकलापों एवं प्रश्नों का अभ्यास कीजिए।
- गिल्लू जैसे प्राणियों की गतिविधियों पर ध्यान देने का प्रयास कीजिए।
- रेखाचित्र के अंशों को क्रमशः समझिए।
- रेखाचित्र की भाषा-शैली पर ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. अपने या अपने किसी मित्र के पालतू पशु-पक्षी के घायल होने पर आप उसके उपचार के लिए क्या करेंगे– 20-25 शब्दों में उल्लेख कीजिए।
2. पशु-पक्षियों को पालतू बनाना आपकी दृष्टि में उपयुक्त है या नहीं? तर्कसहित 20-25 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. आवारा पशुओं की समस्या आवासीय बस्तियों में गंभीर रूप क्यों ले लेती है– 20-25 शब्दों में लिखिए।
4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   कौन-सा शब्द-वर्ग असंगत है–

   (क) संधि, बत्ती, स्निग्ध, उपचार

   (ख) मिट्टी, हाथ, पत्तियाँ, घर

   (ग) झुंड, चौंकना, झब्बेदार, चिक्-चिक्

   (घ) मोटर, गमला, हौले, मेज़